* श्रीमते रामानुजाय नमः *

॥ अथ बिरह शतक प्रारम्भः ॥

* दोहा *

राम चरन पञ्चम सतक, राम चरन रसदेइ।
लोहनान्हछै रजमिले. ज्यों चुंबकगहिलेइ॥१॥
रामचरन दृष्टांत यह, जो समुझे मन लाइ।
बसहिंरामसियमगनसोइ,मूकस्वादजिमिखाइ॥
रामचरनबिनबिरहप्रभु,मिलनकल्पचलिजाइ।
गलतसोहागा प्रथमजिमितबकंचनामिलिआइ
बिरहअग्निनिसदिन जरे, सहेज्ञानआसिधार।
रामचरन रघुबीरजन, सतीसूर यकबार ॥४॥

राम बिरह ढिग मनजरे, मूलबीज सबजाइ ।
रामचरन जोज्ञानजर, दावाग्निहरिआइ ॥५॥
चिताबिरहकीअग्निदुइ, रामचरनसोबिचारु ।
चिताजरावैमृतकको,बिरहाजिवतनितजारु॥६॥
रामचरन दुख मिटतहै, ज्योंबिरही अतिहीर ।
रामबिरहसरहियलगे, तनभरिकसकतपीर॥७॥
रामचरन मदिरादि मदरहत घरी दुइ जाम ।
बिरहअनल उतरैनहीं,जबलगिमिलहिंनराम॥
रामचरन जे अर्धजड़, सुरतिनयन सबपोखि ।
बिरहअंधतनधामधन,तेहिकछुपरै न देखि॥९॥
रामचरनजे धीर जगसुनै, सयन के फेर ।
रामबिरह नाहिं सुन कछू कर्म धर्म श्रुतिटेर ॥
धर्म शूरअसि अग्निबिष, ज्ञान जोगतपदान ।
रामचरननहि तुलैसब, बिरहीसूरसमान॥११॥

धर्म विजयसंततसुगति, जपतपसकलसकाम।
रामचरनविरहीमगन, रूपविलोकतराम॥१२॥
ज्ञानध्यान जप जोगतप जोसुधर्म श्रुतिसार।
रामचरनप्रभुविरहबिनु, जोंविधवांशृंगार॥१३॥
रामचरन विरही त्रिधा, मोर चकोर सुमीन।
सुनियकलखियकलोनयक, निज२प्रेमहिपीन॥
रामचरनरविमनिश्रवत, निरषिविरहिनीपीव।
अग्निनिरषिजिमिघृतद्रवत रामरूपलखिजीव॥
राम विरह सीतल अगिन, कारनतनजरजाइ।
रामचरन जवासजिमि, पावसकोजलपाइ॥१६॥
विरहआसमसिवुधिलिखतमृत्युकागजजरिजाइ।
रामचरनचितवनथकितको, रघुवरहिसुनाइ॥
रामचरन रघुनंदजू, तुम बिनु पलपलमोहि।
जिमिनिमिमेचकइचिकल, मोरसखामीतोहि॥

हे रघुबरजीतुमहि बिनु, अमियरहितजिमिचंद।
रामचरनयहिमनिबिना,क्योंजीवैरघुनंद॥१६॥
प्रेमसराहिये मीन को, बिछुरत प्रीतमनीर।
रामचरन तलफतमरे, तिमिजिय बिनरघुबीर॥
रामचरनजलनिठुरहोइ, सोभिमित्रलखिप्रीति।
मीनमरत जलबिछुरतहि,सांचप्रीतिकीरीति॥
कबलगिहै चितरामदिसि, जैसे चन्दचकोर।
रामचरनछबिरामकी,पिअतभूलिसबओर२३॥
चन्दहिलगेउचकोर चित भूलिजातसबअंग।
रामचरन कबलागहि चितमो रत्यागिसबसंग।
राम चरनइमिहृदयधरि, दारुअग्नि परिपाक।
हृदय है तेसंगजरे, तेहि बिछुरत भैखाक॥२४॥
कबहोइहि संजोग अस, दीप रूप प्रभुतोर॥
रामचरनदेखतमरहि, मनपतंग होइमोर॥२५।

संचित पापकुसंगते, जिय भूलेउ हरिओर ।
कबललकिहिजिमिछुधितसिसु, चितै मातु दिसिदौर॥
रामचरन कबतव गुनन, मनन करिहि मनरोक।
जिमिकामिनीमनिमन, त्यागिलोकपरलोक २७
जथाजतनबिनुलगतमन,तियसुतननधनधाम।
रामचरन यहिभांतिमन, कबलागिहिपदराम ॥
अहंकार कब ह्वेइ अस, रामचरन पतिराम ।
ज्योंमूरखहठतजे नाहिं, जायप्रान धनधाम २९
अहंकार कबहोइ अस, मै मिलिहौं रघुनाथ ।
रामचरनजिमि सूरण, मरतत्यागिसबसाथ ॥
रामचरन सबमतसमुझि, बुद्धिनिश्चैकबयेह ।
रामनाम गहिस्वातिजल, अपरपपीहीयेह ३१
बुधि निश्चै तब जानिये, रामचरन दृढ़होइ ।
यथामती पियसंगदै, जगतनेहसब षोइ॥३२॥

राम रूप कब चिंति है, रामचरन चितमोर।
जथा बिरहिनीनारिको, चितप्रीतमकीओर ३३
चितचितते ते जानिये, जहँ देखै तहँ राम।
रामचरनजिमिकीट चित,भृंग मयेतननाम ३४
कबसूरतिलागिहिललाकि, रामचन्द्र पदकंज।
रामचरन ज्योंसुमनको, भृंगनित्य रसरंज३५
तब सूरति सांची लखै, राम चरन ठहराइ।
मिडौनज्यों घटनारिसिर, सखिनसंगतबलाइ॥
रामचरन सांची सूरति नटी बांसचढ़िजाइ।
चले न सूरतिअचलतेहि, बीचबजारबजाइ॥
सुरतिचढ़ी मुख रामलखि, जथाखेलारीसंग।
रामचरन उतरेलगे, तब पावे जयरंग॥३८॥
तुमहि लगावहु तबलगे, मम सूरत रघुनाथ।
रामचरन कठ पूतरी, नचैसूत्र धरहाथ॥३९॥

काम क्रोधमदलोभ रिपु, सुरतिलगन नहिं देत ।
रामचरनाजिमिमूढ़कृत, पर अकाजबिनुहेत ४०
रामचरन नहिसुरतिलगु, बिनाकृपा श्रीराम ।
बसीकाराजिमि मन्त्रते, हरत चित्तपरदाम ४१॥
रबिसासिकबराहुहि, चहतप्रबलग्रसतसोआइ ।
रामचरन उग्रह तब, रामचक्र जब जाइ ॥४२॥
रामकरेहु तुम ममसुरति, कमठअंडककीनाइ ।
रामचरन तबपलत,सोनाहितरइहोइजाइ४३॥
राममोरि सुधि आपुकरि, गहउ बड़ेकोआस ।
जथादीप मानिकचहत, मनिमहँ स्वयं प्रकास ॥
रामलगावहु आपुमै, ज्यों किसानसन खेत ।
रामचरन सीतोष्णतजि,निसदिनतहांसचेत ॥
श्रवन सुनिहि कबरामजस, जैसे रागकुरंग ।
रामचरनबधबधिकजो,सुधिनाहिंहोइतेहिअंग ॥

रामचरन अस श्रवन, सुनु रामचंद्र परताप ।
जथासंतपर जस सुनत दुष्ट सुनतपरपाप४७
रामचरन कबपरसि है, राम अंग मे अंग ।
जिमितियपियबिछरोमिलो,ब्यापितजुगलअनङ्ग
रामतुमहि मिलिहोंकबहु, रामचरनभरि अंग ।
तजैनपुनिप्रानहु गये, जथापाइमनिरंक ॥४६॥
रामचरन जियमिलिहिजबहरिमीठोजगफीक ।
लोहकनक पारसपरसि,मीठोलोहाकिलीक५०॥
हे रघुनन्दन चष सुमतिकब देखहिछबि तोरि ।
रामचरनजिमिपूरससि,लखतचकोरकिशोर५१
कबनैननभरि देखिहों, रामरूप प्रति अंग ।
रामचरनजिमिदीप छबि लखिमरिजातपतंग ॥
कबरसना रामहि रटहि, जथा कूररिबिहंग ।
रामचरन चातक रटत,बारह मासअभंग५३॥

मिली बालुसरकारातिमि हरिजसजगजसदोइ ।
नाकपपीलकगहिहि,कबरामचरनरसजोइ ५४॥
राम कर्म कर कब करिहि, रामचरन यह रीति ।
जिमिलोभीनित जतनधन,तियसुतपृयनप्रतीति
रामचरन कर करिहि कब, राम भक्त को काज ।
जिमिसुनारिपतिमनलखाति,त्यागिलाजसबकाज॥
सुजन राम तीरथ मिले, पड़ा चलिहि मनलाइ।
रामचरनज्यों कृपिनधन, लूटनको उठिधाइ ५७
राम सदन सत संगको, पद चलिहै हरषाइ ।
रामचरनजिमिछुधितद्विज, दानयज्ञसुनिधाइ॥
रामचरन गुरु संत हरि, सीसनवैं सुनिनाम ।
जथानीचभयजुत नृपति. नइ २ करतसलाम ॥
हमिइंद्रिय लगु बिरहयुत, मिलि-सँदेह रघुराइ ।
तामरुहजिमिकनकभये, बूटीभाव बिलाइ ६०

मनकर्मबचनलागिराममय, सतनरामपुरजाव ।
रुसकरंज उलटेजथा, बेला होत गुलाब ॥६१॥
बिषै त्यागि भजि राम को, राम रूप होइपास ।
कीट भृंग भयेउ तन, रामचरन अनयास ॥
रामचरन हौं चहत नहिं, बिषयन छांड़त मोहि ।
बिनुचाहे जिमि चहजवर, आवपुकोरो तोहि ६३
मध्य सभासत सिंधु तट, बचन कहेउ रघुराइ ।
अभयकरौं त्रेलोक ते, सकृत सरन कोउआइ ॥
कोटिबिप्रवधलगतजो, योसकृत सरनममआइ ।
तजौं न तेहि काहिमोर पर, सत्तसिंधु रघुराइ ॥
महाराज बहु काज मैंकी, भूलेहु कलि माहि ।
रामचरन संदेह यह सबकी लखहु सदाहि ६६
रामचरन नहिं जानियत, सरनकवनविधिहोइ ।
बरनाश्रम जगजालभ्रमें सरणलीन सबखोइ ॥

रामचरन जिय अहौ, राम स्वामि ढिग चैन ।
जिमिसुसील पतिव्रतकहि, पतिजोगवतमनबैन
नीलकंज घननील लखि, रामनाम सुनिकूक ।
रामचरन सुधिराम की, होतहृदय दुहु टूक ७५
लीला प्रतिमा चित्रलखि, हृदयहोत अल्हाद ।
रामचरन गुरुमंत श्रुति, फुरितहोत संवाद ७६
उद्दीपन भयोराम तन, तब भूलेउ जग नेह ।
जथाकृपिन नृपरंकभव, परसुख देखिबिदेह ७७
रामचरन भइरामसुधि, बिछुरनलखि बहुकाल ।
तियपितुघरापियनिजभवन,छन २ सुरतिबिहाल
रामचरन प्रभुसुरतिभब, सुंदरस्याम किसोर ।
देखौ अगमधन लेउ किमि,हर्षसोचजिमिचोर॥
सुधिभइ प्यारी रामकी, लखि अलबन दूरि ।
रामचरन पियेपार लखि, बारनारि दुखभूरि ८०

रामचरन रामहिमिली, अस इक्षा अवगाह ।
ज्यों खरके असवारको, गज अरूढ़कोचाह ८१
रामचरन रामाहिचहत, मोहिन चहत कृपाल ।
जैसेनकटी नारि मन, चाहति सुपतिभुपाल ॥
रामचरन रामहि मिलो, यहजिव बड़ी उत्साह ।
जिमिलोभी सुरपुरचहत, कामिहिसुरपुरचाह ॥
रामचरन चितचहतहै, मिलौं राम सनराग ।
जथा मृतकके देखिकैं, बिषइक छनकबिराग ८४
रामचरन श्रीरामबिन, दृग जीवन जग माहिं ।
सकुलजोषिता व्याहबिन, झषत जन्मसिराहिं ॥
दसहुदिशा दावालगेउ, जबबर्षा ऋतु लागि ।
रामचरन रघुबीरबिन, सरदश्रवतससिआगि ॥
सबकहं फूलबसत सुख, अगिन लूकसम सोहि ।
सकलसुजोग कुयोगभव, रामललाबिन तोहि ॥

ज्ञानभक्तिसुखप्रदविरति बिनप्रभुमोहिदुखदाइ
राम चरन भवबिरह ज्वर, सुपंथकुपंथ होइजाइ॥
रामचरन मिलनोसमुझि, अगमभई उरपीर।
कोटिहुं बैदन मिटै दुख बिनु प्रीतम रघुबीर ८६
बिरहअग्निअब हृदयमम, दहतराम बिनुगात।
रामचरन आँसू चुवहिं, तहँ २ तन जरिजात॥
रामचरन रामहि मिलो, उतकंठा हिय पूर।
उड़िचकोरचंदहिमिलो,सिथिलभयोलखिदूर॥
मनपठयोप्रभुमिलनको,निजकृतसमुझिडेरात।
रामचरनजिमिचोरधरिसमयधनिकढिगजात॥
रामचरनजियसकुचबाड़ि, चहतमिलो रघुराइ।
जिमिबिभिचारिनिपतिनिकटपल२चलतडेराइ
रामचरन जग पाछे दै, चलु आगे हरि आनि।
रामचंद्रको चंद्रिका, निजस्वरूप पहिचानि ९४

निजस्वरूप पररूप लखि, पल २ चलत अनंद ।
रामचरन तबद्रवहिंप्रभु, देखो चंद्रमनिचंद ९५
जुक्तितजे प्रभुभजे बिनु, मिटे न जिवके पीर ।
रामचरन बिनु धनुषके, तजेलगे किमि तीर ९६
रामचरन जग बासना, तबलगि सुधि ना कोइ ।
ज्यों मदकेघटभरेकछु, पावनकोहिबिधि होइ ९७
लोकलाज अभिमानसुख, तबलगिहृदयनराम।
रामचरनरघुनृपकयें बसैंगे,जहांमलिनलघुधाम
लोकमान के अग्नि में, धर्म कर्म जरिजाइ ।
रामचरन रघुनंद को, करुना वारि बुझाइ ९९॥
अस करुणा करिहौ कबहु, रामचरन पर राम ।
तबसरूप जल मीनमैं, नसै बिछोहत नाम १००
यह दृष्टांत बोधिका, सतक बिरह को अङ्ग ।
रामचरन ते समुझिरहु, रामन छोड़हिं सङ्ग ॥

इतिश्री बिरहशतक चतुर्थसमाप्तम् ॥